International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(3): 126-127
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 21-05-2026
Accepted: 16-06-2026
Publish : 17-06-2026

Dr. KODGAVE KISHAN
Assistant Professor Hindi,
London Management Academy ,
Degree College Panjagutta,
Hyderabad, Telangana

Correspondence:
Dr. KODGAVE KISHAN
Assistant Professor Hindi,
London Management Academy ,
Degree College Panjagutta,
Hyderabad, Telangana

प्रेमचंद की लेखनी का वैश्विक दृष्टिकोण और महत्व

Dr. KODGAVE KISHAN

प्रेमचंद ने भारत की स्वतंत्रता की समस्या को देश की भौगोलिक सीमा में रखने के बदले वैश्विक दृष्टी से देखने का प्रयास किया। इस प्रवृत्ति ने उन्हें संसार के समस्त मानव की आर्थिक खुशहाली, स्वास्थ्य और उन्नति के लिए प्रेरित किया। भारत में समानता के अधिकार और किसानो को अपनी भूमि पर मालिकाना अधिकार की जिन समस्याओं को उन्होंने अपना विषय बनाया था,उन्हें विदेशी तथा अन्य अविकसित देशों में भी महत्वा प्राप्त था। भारत के सामान एशिया और अफ्रीका के कई देश दूसरों की अधीनता से मुक्ति प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहे थे ।

प्रेमचंद ने एक विशाल उदार ह्रदय कलाकार के समान समस्त मानव जाति के अधिकारों के सम्बन्ध में विचार किया था। उन्होंने गोर्की के समान स्वच्छंदतावादी होने के कारन स्वतंत्रता के संघर्ष को तीव्र करने के विचार से अतीत की घटनाओं को लिपिबद्ध किया, किन्तु उनकी अधिकांश कहानियाँ अपने युग के संघर्ष को वजागर करती हैं । प्रेमचंद की 'नमक का दरोगा' कहानी समाज की यथार्थ स्थिति को उद्घाटित करती है। 'पूस की रात' कहानी में भारतीय किसान की लाचारी का यथार्थ चित्रण मिलता है। 'शतरंज के खिलाडी' इस कहानी को आधार बनाकर 1977 में सत्यजीत राय ने इसी नाम से हिंदी फिल्म भी बनायी थी इस कहानी में प्रेमचंद ने वाजिद अलीशाह के वक्त लखनऊ को चित्रित किया है जो भोग विलास में डूबा हुआ यह शहर राजनितिक-समाजिक चेतना से शुन्य है।

प्रेमचंद और गोर्की की लेखनी में उद्देश्यों की एकता के अलावा उनके व्यक्तित्वा और रूप-रंग में भी बड़ी समानता थी जिसमें भारत और रूस की राजनितिक एवं भौगोलिक सीमाएं टूटती दिखाई देती हैं। लेकिन अंतर्राष्ट्रीय लेखकों में प्रेमचंद सबसे अधिक टॉलस्टाय से प्रभावित हुए थे। प्रेमचंद ने स्वयं अपने शब्दों में कहा भी है- डॉ. इंद्रनाथ मदान को 26 दिसंबर 1934 ई. के पत्र में लिखा था-

" हाँ मेरे ऊपर टॉलस्टाय, विक्टर ह्यूगो और रोमांरोला का प्रभाव पड़ा है।"

टॉलस्टाय के सिद्धांतों में श्रद्धा एवं दया, त्याग एवं बलिदान और अहिंसा का असाधारण महत्वा था उसने ह्रदय परिवर्तन के विचार को स्वीकार कर लिया था महात्मा गाँधी के समन प्रेमचंद ने भी इन विचारों को अपने आधारभूत विश्वासों का स्थान दे रखा था। प्रेमचंद की कहानियों में मानव के जिन गुणों को उभरने का प्रयास मिलता है , वही टॉलस्टाय की कहानियों में भी दिखाई देता है। प्रेमचंद ने टॉलस्टाय के समान कहानियाँ लिखी। उनमें 'सेवामार्ग' और 'उपदेश' को विशेष महत्वा दिया जा सकता है। उनकी कहानियों से प्रेमचंद और टॉलस्टाय के गहरे अर्थपूर्ण संबंधों का आभास होता है।

नैतिक जीवन का जो टॉलस्टाय ने स्वीकार किया था, वही प्रेमचंद के सामने भी था। वह विचार किसी देश या जाति तक सिमित नहीं किया जा सकता। संसार के विभिन्न भागों में रहनेवाले नैतिक

जीवन की इस विचारधारा के घेरे में रखे जा सकता हैं। इसी आधार पर टॉलस्टाय और प्रेमचंद की कहानियों के पत्र दूसरे देशों के लोगों को भी पसंद आते हैं। जापान में प्रेमचंद की कहानी 'मुक्तिमार्ग' का अनुवाद हुआ, तो उसे वहां महत्वपूर्ण मासिक 'कामीज़ो' ने प्रकाशित किया और लोगों ने खुले दिल से उसका स्वागत किया। प्रेमचंद ने अपने अभिन्न मित्र शिवपूजन सहाय के नाम 29 अगस्त 1928 ई. के पत्र में अपनी सफलता का उल्लेख किया था - आपको यह सुनकर आनंद होगा कि मेरी कई कहानियों के जापानी भाषा में अनुवाद प्रकाशित हुए हैं और वहां की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं। जापानी जनता ने उनका वही सम्मान किया, जो टॉलस्टाय और चेख़व की कहानियों का करते हैं । पत्रों में खूब चर्चा रही मेरे पास जो पत्र आया है , उसमे लिखा है -"Your stories were the sensation in the month of June." बस यही बातें तो प्रेमचंद के दिल को लगती हैं, प्रसन्न हो जाते हैं।

उस समय के राजनितिक गतिविधियों का संघर्ष चल रहा था प्रेमचंद की दृष्टी इन परिस्थितियों का गहन अध्ययन कर रही थी। प्रेमचंद की लेखनी अंतर्राष्ट्रीय है, जिसे प्रेमचंद विश्वव्यापी कलम के रूप में देखते हैं, परन्तु इसका आधार वैमनस्य है। उन्होंने 26 फरवरी 1933 ई. के 'जागरण' में लिखा था -

"आज समूचा चीन हो रहा है। मनुष्य के स्थान पर राजा है, जागीरदारों के स्थान पर राज्यों के राजनितिक नेता यही और लुटेरों के स्थान पर उच्छृंखल दाल है। छोटा-सा राज्य मांटिकार्लो भी चाहता है कि लन्दन गद्दी उसे मिले और ब्रिटिश समूचे विश्व को अपना उपनिवेश, समूचे बाजार को अपना दास और समूचे राज्यों को अपना चेला बनाना चाहता है। फ्रांसवाले एक-दूसरे के रक्त के प्यासे हैं। स्पेन में प्रजातंत्र है, हिटलरतंत्र है, हिंडनवर्गतन्त्र है, और कुछ नहीं, केवल एक भीषण मर-काट की तैयारी है। जापान मंचूरिया ही नहीं, चीन को भी हड़प लेना चाहता हैं और ज़रूर सोचता होगा कि मौका मिलने पर टोकियों का प्रधान अड्डा जमाया जाए।"

रूस की महँ अक्टूबर क्रांति से प्रभावित भारतीय मनीषियों, साहित्यकारों और लेखकों में प्रेमचंद अकेले नहीं थे। इनके अलावा सुब्रह्मण्यम भारती, रविंद्रनाथ टैगोर और 'अल्लाम' इक़बाल भी थे, किन्तु हिन्द-रुसी मैत्री के असली प्रवर्तक पंडित जवाहरलाल नेहरू थे, जो प्रेमचंद के अपने हीरो भी थे। 'रंगभूमि' में विनय के रूप में नेहरू ही हैं। कहानियों में सीधे रूप में बनाते, किन्तु स्वतंत्रता आंदोलन से प्रभावित कहानियों में महात्मा गाँधी के प्रभावों के अंतर्गत नेहरू के सोच-विचार संकेत भी मिलते हैं।

निष्कर्ष:-

प्रेमचंद की अंतर्राष्ट्रीय विचारधारा के संबंध में पूर्ण रूप से कहा जा सकता है कि उन्होंने विश्व के दूसरे मानव मित्र साहित्यकरों के समान, राष्ट्रिय एवं अंतर्राष्ट्रीय में भेद-भावरहित भारतीय खुशहाली को विश्व के परिप्रेक्षा में देखा, प्रेमचंद ने बिना नस्ल और रंग के भेद-भाव के बिना मानवीय जाति की समस्याओं में रूचि ली। प्रेमचंद किसानों और श्रमिकों की खुशहाली को विश्व खुशहाली के परिप्रेक्ष में देखते थे। सारे विश्व में सुरक्षा और शांति और समानता देखना चाहते थे। एक ऐसी राजनितिक व्यवस्था की कल्पना करते थे, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की अवश्यकताएँ सामान रूप में उपलब्ध कराई जाएंगी। विकास के रास्ते सबके लिए सामान रूप से खुले होंगे। अन्याय एवं रहेगा। शोषण से मुक्त समाज होगा। इस प्रकार का समज कभी स्थापित हो सकेगा या नहीं, किन्तु इसकी सुन्दर कल्पना को कौन अस्वीकार करेगा?

सन्दर्भ ग्रन्थ:-

1. प्रेमचंद कहानी का रहनुमा, ज़ाफर रज़ा ,2002, लोकभारती प्रकाशन
2. हिंदी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेंद्र ,2015, नागरी प्रचार सभा, काशी
3. हिंदी उपन्यास का विकास, मधुरेश ,2012, लोगभारती की प्रकाशन
4. प्रेमचंद विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता , मुरली मनोहर प्रसाद सिंह एवं रेखा अवस्थी, 2006, राजकमल प्रकाशन